छहढाला क्यों महत्त्वपूर्ण है ?

-प्रो. वीरसागर जैन

कविवर पण्डित दौलतराम कृत 'छहढाला' को आज कौन नहीं जानता ? यद्यपि यह जैन धर्म का कोई प्राचीन आचार्य-प्रणीत प्राकृत-संस्कृत भाषा का मूल ग्रन्थ नहीं है, परन्तु फिर भी इसकी लोकप्रियता आश्चर्यजनक है | इस ग्रन्थ की रचना को अभी कुल 190 वर्ष हुए हैं, परन्तु संसार में प्राय: सर्वत्र ही इसका अद्‌भुत प्रचार देखा जाता है | देश में ही नहीं, विदेशों में भी अधिकांश लोग इसका मनोयोगपूर्वक स्वाध्याय करते हैं | इतना ही नहीं, हजारों लोग तो ऐसे भी मिलते हैं, जिन्होंने इसे पूरा कंठस्थ कर रखा है और प्राय: प्रतिदिन इसका पाठ भी करते हैं | गूगल और यूट्यूब पर भी इसके अनगिनत संगीतमय पाठ उपलब्ध हैं और घर-घर में निरन्तर चलते ही रहते हैं | बड़े-बड़े विद्वान् ही नहीं, मुनिगण भी इसका सभा में स्वाध्याय करते-कराते हैं | यह ग्रन्थ यद्यपि दिगम्बर जैन परम्परा का है, परन्तु फिर भी मैंने इसके बीसों छन्द श्वेताम्बर मन्दिरों और स्थानकों में भी दीवार पर लिखे हुए देखे हैं, बारह भावना के रूप में इसकी पूरी पाँचवीं ढाल लिखी हुई देखी है, ज्ञान के महत्त्ववाले छन्द भी बहुत अधिक लिखे देखे हैं | इसके अतिरिक्त साहित्य के इतिहास-ग्रन्थों में भी यत्र-तत्र इसके महत्त्व-प्रकाशक उल्लेख प्राप्त होते हैं | विचारणीय है कि आखिर यह छहढाला इतना अधिक महत्त्वपूर्ण क्यों है, इसकी ऐसी क्या विशेषता है | मेरी दृष्टि में इस छहढाला की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

1. **संक्षिप्तता**- छहढाला के महत्त्वपूर्ण होने का एक प्रमुख कारण यह है कि यह बहुत संक्षिप्त है, छोटी है | इसमें मंगलाचरण, प्रशस्ति को मिलाकर भी कुल एक सौ (100) भी छन्द नहीं हैं, मात्र 93 छन्द ही हैं | इसलिए इसे बहुत कम समय में पूरा पढ़ा जा सकता है |
2. **सारगर्भितता-** यह छहढाला केवल संक्षिप्त ही नहीं है, सारगर्भित भी है | इसकी एक-एक ढाल में इतना अर्थ भरा है कि उस पर चार-चार ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं | लिखे क्या जा सकते हैं, लिखे ही हुये हैं | यही कारण है कि इसके बारे में कहावत प्रसिद्ध है कि इसमें तो 'गागर में सागर' भरा हुआ है | आचार्य विद्यानन्दजी तो इससे भी एक कदम आगे बढ़कर कहते थे कि इसमें तो सरसों के दाने में (छेद करके) सागर भरा हुआ है | छहढाला में अध्याय और छन्द की बात तो दूर, एक-एक शब्द में, उसके क्रम आदि तक में भी बड़ा रहस्य भरा हुआ है | मुझे तो अनेक स्थानों पर सूत्रात्मकता जैसी दिखाई देती है |जैसे कि- वीतराग-विज्ञानता, वनिता-गदादि जुत चिह्न चीन, इत्यादि | इस प्रकार सारगर्भितता भी छहढाला के महत्त्वपूर्ण होने का प्रमुख कारण है |
3. **सम्पूर्णता-** छहढाला की एक बड़ी विशेषता यह है कि इसमें सम्पूर्णता है, अधूरापन नहीं है | इसमें पूरी कथा है, उसका एक अंश नहीं है | निगोद से लेकर मोक्ष तक की ऐसी संक्षिप्त, सारगर्भित और सम्पूर्ण कथा अन्यत्र दुर्लभ है |
4. **प्रामाणिकता-** छहढाला एक अत्यन्त प्रामाणिक ग्रन्थ है | इसकी एक-एक पंक्ति प्राचीन प्राकृत-संस्कृत के मूल आगम-ग्रन्थों के आधार से लिखी गई है | अनेक स्थानों पर तो ऐसा लगता है मानों छायानुवाद ही हो | सभी जानते हैं कि इसके रचयिता कविवर दौलतराम व्यवसाय करते समय भी प्राकृत-संस्कृत के मूल आगम-ग्रन्थों को कंठस्थ करते रहते थे | इस ग्रन्थ की इतनी प्रामाणिकता उसी का प्रभाव है |

5. **प्रयोजनभूतता-** छहढाला एक प्रयोजनभूत विषय को लेकर लिखा गया है | इसकी एक-एक बात, एक-एक पंक्ति अत्यन्त प्रयोजनभूत है | कहीं कोई एक भी पंक्ति अप्रयोजनभूत विषय को लेकर नहीं दिखाई देती है |
6. **आध्यात्मिकता-** छहढाला एक उच्च कोटि का आध्यात्मिक ग्रन्थ है | इसमें आत्मकल्याण की सीधी बात समझाई गई है | अनेक विद्वानों ने तो इसे 'छोटा समयसार' ही कहा है |
7. **गम्भीरता-** छहढाला एक गम्भीर ग्रन्थ भी है, इसमें कहीं कुछ हल्कापन नहीं है | इसका एक-एक शब्द साहित्यिक या गूढार्थ-गर्भित है | इस छहढाला से पहले कविवर द्यानतराय और बुधजन भी छहढाला लिख चुके थे, पर जैसी शास्त्रीयता या गम्भीरता इसमें दृष्टिगोचर होती है, वैसी वहाँ भी नहीं मिलती |
8. **सरसता-** यह छहढाला गम्भीर होकर भी अत्यन्त सरस है, बिलकुल भी बोझिल नहीं है | इसे पढ़ते हुए एकदम कहानी जैसा रस आता है | कोई भी पाठक उसमें भावविभोर होकर डूब जाता है | यही कारण है कि पाठशाला के बच्चे भी इस छहढाला का रुचिपूर्वक अध्ययन करते देखे जाते हैं |
9. **क्रमबद्धता-** इस छहढाला में एक क्रमबद्धता या प्रवाहशीलता का भी अद्भुत गुण दृष्टिगोचर होता है, जिसके कारण हर कोई पाठक इससे आकर्षित होकर प्रगाढ़ रूप से बंध जाता है | इसका विषय बहुत ही क्रमबद्ध रीति से आगे बढ़ता है |
10. **सम्यग्दर्शन-ज्ञान का महत्त्व-निरूपण-** वैसे तो इस छहढाला का हर छन्द ही रत्न है, फिर भी इसकी तीसरी और चौथी ढाल में जो सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान की महिमा बतानेवाले कुछ छन्द आये हैं, वे बहुत ही अद्भुत अपूर्व हैं | छहढाला को लोकप्रिय बनाने में, जन-जन तक पहुँचाने में उन छन्दों का भी भारी योगदान है |
11. **मंगलाचरण-** इस छहढाला को महत्त्व मिलने का एक प्रमुख कारण इसका मंगलाचरण भी है, जो बहुत ही सारगर्भित है | कोई विद्वान् उसका बहुत विस्तार से व्याख्यान कर सकता है | यदि ऐसा भी कहें कि उसमें सर्व उपदेश का सार भर दिया है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी | जिसप्रकार तत्त्वार्थसूत्र को महत्त्व दिलाने में उसके मंगलाचरण की बड़ी भूमिका रही है, उसीप्रकार इस छहढाला को महत्त्व दिलाने में इसके मंगलाचरण की बड़ी भूमिका है |
12. **गेयता-** इस छहढाला की गेयता भी जबरदस्त है | कोई संगीत का विद्यार्थी इसका इस दृष्टि से अध्ययन प्रस्तुत करे तो बहुत कह सकता है, पर उस गेयता का अनुभव तो सभी पाठक करते ही हैं | इसकी हर ढाल में अलग-अलग राग का प्रयोग है, जो एकदम भावानुरूप और अत्यन्त मधुर है | उसको गाते या सुनते समय मन ऐसे डोलने लगता है मानों सर्प बीन सुनकर नाचने लगा हो |
13. **छन्दो-योजना-** इस छहढाला की छन्दो-योजना भी बहुत अच्छी है | प्रत्येक ढाल में अलग-अलग छन्दों का प्रयोग है | हर ढाल का छन्द उसकी विषयवस्तु के साथ एकदम फिट बैठ रहा है | उदाहरणार्थ पाँचवीं ढाल में बारह भावना का छन्द ऐसा है, मानों अभी विरक्त कर देगा | इसी प्रकार अन्य भी सभी छन्द अपने-अपने विषय को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं |
14. **नामकरण-** छहढाला को लोकप्रिय बनाने में इसके नामकरण का भी बड़ा योगदान है | यद्यपि यह एक विधा है, पर बहुत ही अर्थपूर्ण है | विद्वानों ने इसके इस नामकरण के अनेक आध्यात्मिक अर्थ किये हैं |

जैसे कि जो सभी ओर से हमारी रक्षा करे, वह छहढाला है | युद्ध में तो एक ही ढाल हमें प्रहार से बचाती है, पर यह तो छहों ओर से हमें संसार-दु:खों से बचाती है |

15. **भाषा-** छहढाला को लोकप्रिय बनाने में इसकी भाषा का भी बड़ा योगदान है | वह न तो प्राचीन या मध्यकाल की ब्रज भाषा ही है, जो उस समय बहुत चल रही थी और न ही आज की आधुनिक खड़ी बोली है | वह तो उन दोनों का ऐसा आभिजात्य मिश्रण है, जो एक साथ प्राचीनता और आधुनिकता दोनों के समन्वय का आनन्द देती है | इसकी शुद्ध परिष्कृत किन्तु कोमलकान्त पदावली बड़ी आकर्षक बन गई है | देखिए- 'जो जोगन की चपलाई, तातें ह्वै आस्रव भाई' |

16. **विविध भाषाओं में अनुवाद-** इस छहढाला के अनेक भाषाओं में अनुवाद भी हुए हैं | न केवल भारतीय भाषाओं में, अपितु अंग्रेजी, रसियन आदि अनेक विदेशी भाषाओं में भी इसके अनुवाद हुए हैं | मेरे एक मित्र तो इसका संस्कृत भाषा में भी अनुवाद कर रहे थे, पर वह अभी पूर्ण नहीं हुआ है |